केजीएमयू में सॉफ्टवेयर लगाने में गड़बड़ी!

अमर उजाला ब्यूरो
लखनऊ।

केजीएमयू में सीपीएमएस सिस्टम लगाने के नाम पर धांधली का आरोप लगाया गया है। इस मामले में एक तीन सदस्यीय जांच कमेटी ने संस्थान के डॉक्टर पर खुद सॉफ्टवेयर बनाने और फिर उसे केजीएमयू को दो करोड़ रुपये में बेचने रिपोर्ट कुलपति को सौंपी है। इसका भुगतान उस कंपनी को किया गया, जिसके निदेशक स्वयं डॉक्टर ही हैं। इस मामले में राजभवन में शिकायत हुई थी।

राजभवन में केजीएमयू में मरीजों के लिए ऑनलाइन सुविधा शुरू करने के लिए सॉफ्टवेयर लगाने में धांधली की शिकायत हुई थी। इसमें केजीएमयू के चिकित्सकों पर प्रोप्राइटर विक्रांत के साथ मिलकर फ्लूड फेंटसी नाम की सॉफ्टवेयर कंपनी बनाने और फिर सॉफ्टवेयर केजीएमयू को देकर इस प्रोजेक्ट में

संस्थान के चिकित्सक के खिलाफ शिकायत के बाद हुई जांच

दो करोड़ रुपये खपा दिए। इसी शिकायत के आधार राजभवन ने 25 सितंबर 2017 को केजीएमयू कुलपति को पूरे मामले की जांच के आदेश दिए थे। राजभवन के पत्र में कुलपति को निर्देश दिए गए थे कि वह शासनादेशों के अनुरूप प्रत्यावेदक से समुचित साक्ष्य व शपथ पत्र लेकर नियमानुसार कार्रवाई करें। इस मामले में अगस्त 2017 में तीन सदस्यीय जांच कमेटी बनाई गई। इसमें एकेटीयू के कुलपति डॉ. विनय पाठक, केजीएमयू गठिया रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. सिद्धार्थदास और पल्मोनरी मेडिसिन विभाग के डॉ. संतोष कुमार शामिल थे। सितंबर में जांच पूरी कर कमेटी ने रिपोर्ट केजीएमयू कुलपति को सौंप दी।

तीन सदस्यीय कमेटी की रिपोर्ट पर कार्य परिषद ने उठाए थे सवाल, अचानक पूरी जांच रिपोर्ट हुई लीक

जांच कमेटी की रिपोर्ट

>>संस्थान में रहते हुए चिकित्सक ने सॉफ्टवेयर तैयार कर उसे बेचा
>>आईटी प्रोफेशनल को रखने में नियमों की अनदेखी की गई।
>>यूपी डेस्को और यूपी इलेक्ट्रॉनिक में सीपीएमएस तैयार करने वाली संस्था एलगरिदम इंफो वेब प्राइवेट लिमिटेड पंजीकृत नहीं थी।

करोड़ों का सीपीएमएस बंद क्यों ?

केजीएमयू प्रशासन पर एक ऐसे सीपीएमएस सिस्टम को बंद करने का आरोप लगा है जिस पर संस्थान के करोड़ों रुपये खर्च हुए हैं। नए कुलपति प्रो.एमएलबी भट्ट के कार्यभार संभालने के बाद अचानक 1 अप्रैल 2017 को इस सिस्टम को बंद करते हुए एक ऐसे फैकल्टी को नए हॉस्पिटल इंफार्मेशन सिस्टम को विकसित करने की जिम्मेदारी दी गई है जो पहले ही एक आउट डेटेड सर्वर लगाने के मामले के जिम्मेदार हैं। जिन चिकित्सकों पर गड़बड़ी का आरोप है उनका कहना है कि केजीएमयू में निर्मित सॉफ्टवेयर मार्च 2012 में ही चीफ प्रॉक्टर डॉ. अब्बास अली मेंहदी को सभी कंप्यूटर पासवर्ड सहित हस्तांतरित किया जा चुका है। उन पर जिस सॉफ्टवेयर को बेचने का आरोप है व कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ केयर नामक सॉफ्टवेयर है। उसी का कॉपीराइट लिया जा चुका है। यह भी दावा किया गया है कि सीपीएमएस सॉफ्टवेयर से केजीएमयू को सात करोड़ की आमदनी हुई। नैक की ग्रेडिंग, नए विभागों को एमसीआई की मान्यता और स्कॉच प्लैटिनम अवार्ड मिले हैं।

जांच कमेटी पर उठे सवाल

सीपीएमएस सिस्टम बनाने वाले चिकित्सक ने इस जांच कमेटी पर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि कुलपति के निर्देश पर कुलसचिव ने जो कमेटी बनाई है, वह नियमविरुद्ध है। इस कमेटी को बिना कार्य परिषद के अनुमोदन के गठित किया गया है। यही नहीं कुछ दिन पहले हुई कार्य परिषद में इसे गलत तरीके से रखा गया है, जिससे कार्य परिषद के सदस्यों ने जांच रिपोर्ट को ठुकराते हुए, इसे नियमानुसार लाने के लिए कहा गया। इसी जांच रिपोर्ट को साजिशन अब लीक किया गया है। इसके अलावा चिकित्सकों ने एकेटीयू के कुलपति व पल्मोनरी मेडिसिन विभाग के चिकित्सक डॉ. संतोष को जूनियर बताते हुए जांच कमेटी में शामिल करने पर ही अंगुली उठा दी है। साथ ही ये भी कहा गया कि एक अन्य सदस्य डॉ. सिद्धार्थ दास स्वयं सीपीएमएस को हुए 90 लाख के भुगतान के शामिल थे। ऐसे में वह स्वयं अपने खिलाफ ही जांच कर रहे हैं। चिकित्सक का कहना है कि आधा दर्जन से अधिक चिकित्सक विभिन्न इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी की रॉयल्टी ले रहे हैं। ऐसे में उन्होंने सॉफ्टवेयर को किसी अन्य संस्थान को दिया तो उसमें क्या गलत है।

न्यूज डायरी

बलरामपुर अस्पताल में डेंटल क्लीनिक शुरू

लखनऊ। आधुनिक सुविधाओं से लैस डेंटल क्लीनिक की शुरुआत बलरामपुर अस्पताल में भी बुधवार को हो गई। अब मरीजों को रूट कैनाल के इलाज के लिए दूसरे अस्पताल नहीं जाने पड़ेंगे। सुपर स्पेशियलिटी वार्ड में इस क्लीनिक का लोकार्पण कर किया गया। निदेशक डॉ. राजीव लोचन ने बताया कि एक ऑपरेशन थिएटर के साथ इस क्लीनिक की शुरुआत की गई है। जल्द ही इसे और विस्तार दिया जाएगा। डेंटल यूनिट चेयर और एक्स-रे लगा दिए गए हैं। मरीजों का इलाज भी शुरू कर दिया गया है।

भंडारण निगम में चला स्वच्छता अभियान

लखनऊ। गांधी जयंती के मौके पर 'स्वच्छता ही सेवा है' अभियान के तहत राज्य भंडारण निगम परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। प्रबंध निदेशक आलोक सिंह की अगुवाई में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने श्रमदान किया।

डीएनबी की पढ़ाई के लिए भेजा प्रस्ताव

लखनऊ। बलरामपुर अस्पताल में पांच विभागों की 14 सीटों पर डीएनबी (डिप्लोमेट नेशनल बोर्ड) के पाठ्यक्रम को शुरू करने की तैयारी की जा रही है। इसके लिए अस्पताल प्रशासन की ओर डिप्लोमेट नेशनल बोर्ड को प्रस्ताव भेज दिया गया है। निदेशक डॉ. राजीव लोचन ने बताया कि सर्जरी और मेडिसीन विभाग की चार-चार और दो-दो सीट पिडियाट्रिक, एनेस्थीसिया और ईएनटी में शुरू करने की योजना है। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग में अधिकारियों के साथ बुधवार को एक मीटिंग भी की गई। तीन साल के यह पाठ्यक्रम सिविल और लोहिया में संचालित किए जाते हैं।

संवासिनियों से विवाह के लिए मांगे आवेदन

लखनऊ। विवाह करने योग्य संवासिनियों की शादी को लेकर इच्छुक युवाओं से आवेदन मांगा गया है। जिला प्रोबेशन अधिकारी वीके रंजन ने बताया कि विवाह के इच्छुक लड़के अपने निवास, आय, आयु, चिकित्सीय प्रमाण पत्र व पारिवारिक स्थिति के संबंध में संबंधित प्रमाण पत्रों सहित कार्यालय अधीक्षिका राजकीय पाश्चातवर्ती देखरेख संगठन मोतीनगर निकट महाराज अग्रसेन इंटर कॉलेज लखनऊ से आवेदन प्राप्त कर सकते हैं। आवेदन पत्र जरूरी प्रमाण पत्र सहित पंजीकृत डाक द्वारा संस्था में जमा किए जाएंगे।

अस्पताल में चिकित्सक मिले न ही कर्मचारी

लखनऊ। सीएमओ के लगातार दौरों के बाद भी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर चिकित्सकों और कर्मचारियों की मनमानी पर लगाम नहीं लग पा रहा है। सीएमओ डॉ. जीएस वाजपेयी ने जब बुधवार सुबह जब जियामऊ व बालू अड्डा स्थित नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण किया तो वहां चिकित्सक और कर्मचारी नदारद मिले। सभी गायब कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस भेजा गया है। सीएमओ का कहना है कि अस्पताल के प्रभारी को नोटिस भेज जवाब मांगा गया है। जो लोग भी गैरहाजिर थे, उनका वेतन काटा जाएगा। सीएमओ डॉ. जीएस बाजपेयी की टीम सुबह करीब 8:30 बजे जियामऊ स्थित ई-यूपीएचसी पहुंचे तो यहां डॉ. प्रशांत गौरव, लैब टेक्नीशियन सुधीर यादव, फार्मासिस्ट संतोष यादव, एएनएम संजय यादव, विमला देवी समेत स्वीपर विशाल भी गायब मिले। इस पर सीएमओ ने नोटिस देकर प्रभारी से कारण पूछा है। इसके बाद सीएमओ जब बालू अड्डा स्थित नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे तो यहां केवल चपरासी ही मौजूद था। पूछने पर पता चला कि चिकित्सक अब तक आए ही नहीं हैं। यहां पर भी प्रभारी डॉ. रुचि बग्गा, स्टाफ नर्स गायत्री राय समेत लैब टेक्नीशियन सभी अनुपस्थित मिले। उपस्थिति रजिस्टर चेक करने के बाद सभी अनुपस्थित चिकित्सक व स्टाफ को नोटिस भेजने के निर्देश दिए। इसके अलावा अस्पताल में सीएमओ को सभी जांच किट एक्सपायर्ड मिलीं। सीएमओ ने तत्काल किट बदलने के निर्देश दिए हैं। वहीं अस्पताल में फैली गंदगी पर भी सीएमओ ने कड़ा रुख अपनाते हुए साफ-सफाई के निर्देश दिए हैं। ब्यूरो

ट्रॉमा सेंटर में स्ट्रेचर भी फुल, 30 मरीज लौटाए

घंटेभर इंतजार के बाद मरीजों को लेकर दूसरे अस्पताल गए तीमारदार

अमर उजाला ब्यूरो
लखनऊ।

केजीएमयू के ट्रॉमा सेंटर में बुधवार को गंभीर मरीजों को भी इलाज मिलना मुश्किल हो गया। मरीजों की संख्या बढ़ने से बेड तो फुल हो ही गए थे, स्ट्रेचर भी नहीं मिल रहा था। इमरजेंसी से लेकर वार्डों तक बेड और स्ट्रेचर के लिए मारामारी मची रही। काफी जद्दोजहद के बाद स्ट्रेचर मिली तो मरीजों को देखने वाले डॉक्टर नहीं आए। ऐसे में कई तीमारदार अपने मरीजों को लेकर सरकारी व निजी अस्पताल निकल गए। केजीएमयू प्रशासन का कहना है कि ट्रॉमा में मरीजों की अधिक संख्या की वजह से ऐसी परेशानी आ रही है।

केजीएमयू के ट्रॉमा सेंटर के मेडिसिन, ऑर्थोपैडिक, न्यूरो सर्जरी, जनरल सर्जरी समेत अन्य विभागों में बेड व स्ट्रेचर को लेकर मारामारी शुरू हो गई। बुधवार दोपहर करीब दो बजे ट्रॉमा की इमरजेंसी में अचानक मरीज बढ़ गए। इमरजेंसी के सभी बेड व स्ट्रेचर फुल हो गए। चिकित्सक व कर्मचारी भी कम होने से मरीजों को इमरजेंसी गेट पर ही रोक लिया गया। करीब एक-एक घंटे इंतजार करने बाद मरीजों को इलाज न मिला तो तीमारदार उन्हें लेकर सरकारी व निजी अस्पताल लेकर चले गए। ऐसे में करीब 30 से अधिक मरीजों को वापस लौटना पड़ा।

मेडिसिन, ऑर्थोपैडिक, न्यूरो सर्जरी, जनरल सर्जरी समेत कई विभागों में मुश्किल हुआ इलाज

बड़े संस्थान भी ट्रॉमा भेज रहे मरीज

मरीज के सिर में चोट देखते ही सरकारी अस्पताल उन्हें भर्ती करने से मना कर देते हैं। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें ट्रॉमा भेज दिया जाता है। अस्पतालों में विशेषज्ञ होने बाद भी मरीजों को सीधे ट्रॉमा भेजा जा रहा है। इससे ट्रॉमा पर लगातार बोझ बढ़ रहा है। केजीएमयू प्रशासन का कहना है पीजीआई व लोहिया संस्थान भी मरीज जल्दी नहीं लेते। अगर संस्थान सहयोग करें तो ट्रॉमा में मरीजों की संख्या कम हो सकती है, जिससे गंभीर मरीजों को इलाज देना आसान हो जाएगा।

मरीज बढ़ने से हो रही परेशानी

बिना इलाज किसी भी मरीज को वापस नहीं करने के निर्देश दिए गए हैं। मरीजों की संख्या बढ़ने से बेड व स्ट्रेचर को लेकर दिक्कत बनी हुई है।

-डॉ. एसएन शंखवार, सीएमएस, केजीएमयू

डेंगू से एक ने तोड़ा दम छह और आए चपेट में

अमर उजाला ब्यूरो
लखनऊ।

राजधानी में पांचवीं मौत, 106 पहुंचा मरीजों का आंकड़ा

राजधानी में डेंगू से बुधवार को एक और मौत हो गई। बंगला बाजार के भगवानदीन की 60 वर्षीय पत्नी यशोदा को केजीएमयू में डेंगू की पुष्टि हुई थी। उनका इलाज चल रहा था। इस बीच बुधवार को उन्होंने दम तोड़ दिया। डेंगू से यह पांचवीं मौत है। वहीं बुधवार को छह नए लोगों में भी डेंगू की पुष्टि हुई है। राजधानी में अब तक 106 लोग डेंगू की चपेट में आ चुके हैं। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक, लालकुआं के भोलेंद्र (45), बंगला बाजार की यशोदा (60), जगदीशपुरकी सुभाषिनी (16), रायबरेली रोड की पार्वती देवी (55), गोमतीनगर की ऋचा सिंह (18) व आलमबाग की सुषमा यादव (55) में डेंगू की पुष्टि हुई है।

डेंगू में दर्द की दवा घातक : डेंगू फीवर हो तो दर्द की दवा बिल्कुल ना खाएं। एस्प्रिन, डिस्प्रिन, ब्रूफेन जैसी दर्द निवारक दवाएं प्लेटलेट्स घटाती हैं। झोलाछाप से इलाज कराने से बचें।

इन बातों का रखें ख्याल

>>कूलर बाल्टी, घड़े और ड्रम का पानी बदलते रहें। >>कहीं पानी जमा है तो उसे मिट्टी से पाट दें। >>जमा पानी में मिट्टी का तेल या जला मोबिल डालें। >> पूरी बांह की शर्ट और पैंट पहनें, मच्छरदानी में सोएं।>> मच्छर निरोधक क्रीम, सरसों या नीम का तेल लगाएं। >> घर में नीम की पत्ती का धुआं करें। >> बच्चों को शाम को मोजा भी पहनाएं। >> बुखार एक दिन से ज्यादा हो तो डॉक्टर को दिखाएं। >> बिना डॉक्टर की सलाह के कोई भी दवा न लें। >> घर में बुखार का रोगी हो तो उसे अलग और मच्छरदानी में रखें। >> मरीज को आराम करने दें। >> फलों का जूस पीने के लिए दें।

लखनऊ-कानपुर रूट पर फिर चिटकी पटरी, टला हादसा

लखनऊ। लखनऊ-कानपुर रेलवे लाइन पर मंगलवार रात अचानक पटरी चिटक गई। हालांकि, कीमैन की सतर्कता से होई हादसा नहीं हुआ। करीब दो घंटे तक पटरी की मरम्मत के चलते ट्रेनों का संचालन प्रभावित रहा।

बंथरा इलाके में लखनऊ-कानपुर रेल खंड स्थित हरौनी रेलवे स्टेशन से करीब 50 मीटर दूर मंगलवार रात एक रेल पटरी चिटक जाने से उसमें बड़ी दरार पड़ गई। इसकी जानकारी तब हुई जब बुधवार सुबह करीब 5:30 बजे कीमैन इन्द्र प्रताप वर्मा की नजर पटरी पर पड़ी। स्टेशन मास्टर शहंशाह आलम की मानें तो पटरी बदलने के लिए बाद में करीब दो घंटे ब्लॉक लेना पड़ा। इस दौरान ट्रेनों का संचालन रोक दिया गया। मालूम हो कि इससे पहले 22 सितंबर की रात उन्नाव के मगरवारा में करीब सवा दस बजे टूटी हुई पटरी से बिहार संपर्क क्रांति गुजर गई। ऐसे ही 22 सितंबर को रात साढ़े आठ बजे मानकनगर में टूटी हुई पटरी से लखनऊ जंक्शन से रवाना 12533 पुष्पक एक्सप्रेस गुजर गई। इसी क्रम में 23 सितम्बर को सुबह करीब छह बजे सफेदाबाद से बाराबंकी जा रही अम्रपाली एक्सप्रेस हादसे का शिकार होते होते बच गई। 6 इंच पटरी का टुकड़ा गायब मिला था। ब्यूरो

करीब दो घंटे तक चला पटरी की मरम्मत का काम, प्रभावित रहा ट्रेनों का संचालन

पंजाब मेल की बोगियों में पानी खत्म, हंगामा

लखनऊ। पंजाब मेल की बोगियों में पानी खत्म होने पर जमकर हंगामा हुआ। जानकारी के मुताबिक, यात्रियों ने पानी खत्म होने की सूचना कर्मचारियों को बरेली व शाहजहांपुर में दी थी, लेकिन अधिकारियों ने अनसुना कर दिया। ट्रेन के चारबाग पहुंची तो यात्रियों ने प्लेटफॉर्म पर हंगामा शुरू कर दिया। पैसेंजरों ने कहा कि उन्होंने कई बार टीटीई से भी स्लीपर बोगियों एस 3, एस 4, एस 5 के शौचालय में पानी भरवाने का अनुरोध किया गया था, लेकिन सुनवाई नहीं हुई। वहीं हंगामा होने पर चारबाग रेलवे प्रशासन ने कोचों में पानी भरवाकर यात्रियों को शांत करवाया और ट्रेन रवाना की गई। ब्यूरो

वॉल्वो से दिल्ली का किराया अब ₹147 ज्यादा

नया किराया बुधवार रात 12 बजे से लागू, दिल्ली की वॉल्वो का किराया 1674 हुआ

अमर उजाला ब्यूरो
लखनऊ।

उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने राज्य परिवहन प्राधिकरण की ओर से बस किराए में नौ पैसा प्रति किमी की बढ़ोतरी की मंजूरी दिए जाने के बाद बुधवार रात 12 बजे से नया किराया वसूलना शुरू कर दिया। अब लखनऊ से दिल्ली तक एक्सप्रेस वे रूट से वॉल्वो व स्कैनिया से सफर करने पर 1674 रुपये का किराया चुकाना होगा। यह पहले के किराए 1527 रुपये से 147 रुपये अधिक होगा। वहीं साधारण बस से लखनऊ से कानपुर तक जाने पर अब 91 रुपये के बजाय 100 रुपये किराया देना होगा। परिवहन निगम की संचालन इकाई की ओर से ट्राइमेक्स कंपनी को नया किराया सिस्टम में फीड करने का आदेश मिला तो रात 10 बजे उसकी फीडिंग हो गई। नये किराए रेट के मुताबिक, अब ठेका गाड़ियों (चार्टर्ड) का किराया न्यूनतम 400 किमी प्रति दिन की दर से वसूल किया जाएगा। इसका दर 41.78 रुपये प्रति किमी तय हुआ है।

चारबाग से किराया

कहां तक	साधारण बस		जनरथ 2/2		वॉल्वो/स्कैनिया	
	पहले	अब	पहले	अब	पहले	अब
दिल्ली (सीतापुर रूट)	528	590	816	897	1389	1524
दिल्ली (एक्सप्रेस वे)	---	---	---	---	1527	1674
देहरादून	633	726	1000	1100	1904	2071
इलाहाबाद	201	220	329	360	531	583
वाराणसी	289	317	482	529	789	869
आगरा	359	395	645	705	1033	1133
कानपुर	91	100	154	168	248	272
गोरखपुर	305	333	502	549	801	879

कैसरबाग से साधारण बस का किराया

कहां तक	पहले	अब	कहां तक	पहले	अब	कहां तक	पहले	अब
दिल्ली	507	547	सीतापुर	90	98	लखीमपुर	138	151
बरेली	248	272	फैजाबाद	138	150	संडीला	52	57
बहराइच	132	137	गोरखपुर	286	312			
हरदोई	110	120	गोंडा	115	126			

नोट: किराया रुपये में
स्रोत : सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक

शोक संदेश

अत्यन्त दुख के साथ आपको सूचित किया जाता है कि श्रीमती ऊषा जैन का दिनांक 25 सितम्बर 2017 को हृदयगति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया है। दिनांक 6 अक्तूबर 2017 को प्रातः 10.00 बजे हमारे निवास स्थान पर हवन तथा 7 अक्तूबर 2017 को प्रातः 10.00 बजे दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर दादाबाड़ी ठाकुरगंज, हरदोई रोड, लखनऊ में पूजा का आयोजन किया गया है।

शोकाकुल परिवारः- के.सी.जैन (पति), निखिल जैन, प्रीती जैन (पुत्र व पुत्रवधू), कुणाल जैन (पुत्र), स्वरा जैन (पौत्री), एवं समस्त लुणावत परिवार

पताः- 645ए/766,जानकी विहार, जानकीपुरम विस्तार, लखनऊ, मो.नं.- 98396-11220

अमर उजाला जोश! सच का!

स्मृतियाँ शेष...

हम आपके दुःख में शरीक हैं

अपने अपनों का बिछड़ना हमेशा पिड़ादायी होता है, लेकिन स्मृतियां माध्यम है जीवन पथ को प्रेरित करने का। आपके अपनों की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने एवं शोक सूचनाएं अपने अपनों तक पहुंचाने के लिए अमर उजाला तत्पर है हर सुख दुख में साथी की तरह।

अभिव्यक्त कीजिए अपनी भावनाऐं अमर उजाला स्मृति शेष के द्वारा

साईज–5x8

लखनऊ सिटी	₹4400 में (B/W) एवं ₹6000 में (Colour)
लखनऊ संस्करण	₹7500 में (B/W) एवं ₹10000 में (Colour)

पताः 3ए, तिलक मार्ग, डालीबाग, लखनऊ
फोनः 8954886188

सुविधा

पीजीआई में आयोजित कार्यशाला में स्वास्थ्य मंत्री ने दी जानकारी

मोबाइल वैन से समय पर मिलेगा इलाज

अमर उजाला ब्यूरो
लखनऊ।

मोबाइल मेडिकल वैन से महिलाओं और बच्चों को समय पर इलाज मिलना आसान हो जाएगा। आशा स्वास्थ्य कर्मियों और मोबाइल मेडिकल वैन के बीच सीधा संपर्क होगा। मोबाइल मेडिकल वैन की उपलब्धता के लिए दिन और समय का चयन किया जाएगा, जिससे आशा कर्मी सीधे लेकर मरीज को उन तक पहुंच सके। जरूरत पड़े तो मरीज को पीएचसी में भर्ती किया जा सकता है। यह जानकारी बुधवार को स्वास्थ्य मंत्री डॉ. सिद्धार्थनाथ सिंह ने दी। वह संजय गांधी पीजीआई में महिलाओं व बच्चों के पोषण की स्थिति विषयक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर पीजीआई और ग्लोबल एलाइंस फार इंप्रूव्ड न्यूट्रिशन गेन के सर्वे को भी प्रस्तुत किया। इस रिपोर्ट में प्रदेश के 40 जिलों में बच्चों और महिलाओं पर शोध किया गया, जिनमें पोषण की कमी दिखी है। मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह ने बताया कि स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसको देखते हुए पीएचसी और सीएचसी को मजबूत किया जा रहा है। इसके लिए दो-दो हजार से ज्यादा एलोपैथ और आयुष चिकित्सकों की भर्ती की गई है। साथ ही और चिकित्सकों की भर्ती पर भी ध्यान दिया जा रहा है। वहीं महिला एवं बाल विकास मंत्री रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर सरकार लगातार प्रयत्नशील है। महिलाएं काम करने की उलझनों के बीच अपनी सेहत की ओर ध्यान नहीं दे पाती हैं। हमें अपनी व्यवस्थाओं को मजबूत करना होगा। साथ ही महिला स्वास्थ्य कर्मियों के दायरे को भी बढ़ाने की आवश्यकता है। पीजीआई के निदेशक प्रो. राकेश कपूर ने कहा कि इन मामलों को लेकर सही जानकारी नहीं थी, क्योंकि अब तक इसकी ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। शोध में सामने आया है कि महिलाओं और बच्चों में पोषण की कमी के कारण उनकी लंबाई का विस्तार नहीं हो रहा है। इस अवसर पर एडिशनल डायरेक्टर जयंत नारलीकर, सीएमएस प्रो. अमित अग्रवाल और एनएचएम के आलोक कुमार ने भी संबोधित किया।

पीजीआई में आयोजित कार्यशाला में मौजूद मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह व मंत्री रीता बहुगुणा जोशी।

उत्तर प्रदेश के 40 गांवों में हुआ शोध

पीजीआई के मॉलिक्यूलर मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष प्रो. मदन मोहन गोडबोले और गेन की प्रो. ल्यूनेट ने बताया कि रिपोर्ट में यूपी के 40 गांवों में शोध किया गया। इसमें दो आयु वर्ग रखे गए। 19 से 29 आयु वर्ग 1238 महिलाओं और पांच से छह साल तक 1238 बच्चों पर शोध किया गया, जिसमें विटामिन की बड़ी कमी सामने आई है।

शोध के नतीजे चिंताजनक

महिलाओं में
>>50.7 फीसदी में जिंक की कमी
>>50.3 फीसदी में आयरन की कमी
>>36.4 फीसदी को एनीमिया
>>40.8 फीसदी में विटामिन ए की कमी
>>14.8 फीसदी का औसत वजन ज्यादा
>>4.0 फीसदी मोटापे की शिकार

बच्चों में
>>28.7 फीसदी में विटामिन डी की कमी
>>17.2 फीसदी में विटामिन बी12 की कमी
>>55 फीसदी को एनीमिया
>>34 फीसदी का वजन कम
>>20.3 फीसदी की औसत उम्र के अनुसार लंबाई कम

फेफड़ों की क्षमता घटा रहा दूषित पर्यावरण

लखनऊ। फेफड़ों की क्षमता कम करने वाली बीमारी आइडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस (आईपीएफ) भारत में तेजी से बढ़ रही है। यह एक गंभीर बीमारी है, जो जानलेवा भी हो सकती है। यह जानकारी केजीएमयू के पल्मोनरी एंड क्रिटिकल केयर मेडिसिन के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी ने बुधवार को मीडिया से बातचीत में दी। उन्होंने बताया कि इस बीमारी का मुख्य कारण धूम्रपान तथा पर्यावरण का दूषित होना है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2011 के आंकड़ों के मुताबिक, 7.2 करोड़ लोग इस बीमारियों से ग्रसित हैं। इंडियन चेस्ट सोसाइटी की ओर से 2017 में किए गए एक शोध में भारत में इस बीमारी से 1084 लोग ग्रसित मिले। आईपीएफ बीमारी के प्रथम स्टेज यानी एक वर्ष के अंदर मरीज चिकित्सक के पास पहुंच जाए तो उसे जानलेवा बीमारी से बचाया जा सकता है। ब्यूरो

केजीएमयू के प्रो. सूर्यकांत ने किया जानलेवा बीमारी आईपीएफ से आगाह